गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

अर्थः हे प्राण स्वरुप दुखहर्ता ,सर्व व्यापक ,आनंद के देने वाले प्रभो ! आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं ! हम आपके उस पूजनीय पापनाशक स्वरुप तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है ! हे पिता ! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो ! आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों मैं प्रेरित करें,ऐसी हमारी प्रार्थना है !

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझ से ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता तू॥
तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु वस्तु में, तु हो रहा है विद्यमान॥
तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥